प्रातः सभा 21-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं जाना तो है ही शरीर छोड़कर। इस दुनिया को भी भूल जाने का है। यह भी एक अभ्यास होता है। जब कोई शरीर में खिट-खिट होती है तो शरीर को भी कोशिश कर भूलना होता है। तो दुनियां को भी भूलना होता है। भूलने का अभ्यास रहता है सुबह को। बस अभी वापस जाने का है। यह ज्ञान तो बच्चों को मिला है। सारी दुनिया को छोड़ अपने घर जाना है। घर प्यारा लगता है ना। अपनी राजधानी भी प्यारी लगती है। उसी धुन में ही बैठना होता है। सोते हुये चलते हुये, अथवा यहां बैठे हुये भी बुधि में है अभी घर जाना है। जास्ती ज्ञान की तो दरकार ही नहीं रहती। कोशिश कर उसी धुन में रहना होता है। भल शरीर को कितनी भी तकलीफ होती है। बच्चों को समझाया जाता है कैसे अभ्यास करो। जैसे तुम हो ही नहीं। बाकी थोड़ा समय है। यह भी अच्छा अभ्यास है। जाना है घर। फिर बाप की भी मदद होती है। या उनकी अपनी मदद है। मदद मिलती जरूर है और यह पुरुषार्थ करना होता है। यह जो कुछ देखने में आता है वह है नहीं। अभी घर जाना है। वहां से फिर अपने राजधानी में आना है। पिछाड़ी में यह दो जाकर रहती है। जाना है फिर आना है। देखा जाता है इसी याद में रहने से शरीर के जो रोग तंग करते हैं वह भी आटोमैटकली ठंढी हो जाती है। वह खुशी रह जाती है। खुशी जैसी खुराक नहीं। इसलिए बच्चों को भी आकर समझाना पड़ता है। बच्चे अभी घर जाना है। स्वीट होम चलना है। इसलिए पुरानी दुनिया को भूल जाने का है। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रि क्लास 20-7-68 :- अभी तो बच्चों को मालूम पड़ता है बाप कल्प2 आते हैं। यही सुनाते हैं कल्प बाद फिर मिलेंगे। बाप कहते हैं बच्चे सुनते हैं फिर कल्प बाद भी सुनेंगे। फिर सुनेंगे यह तो बच्चे जानते हैं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर तुम बच्चों को मार्ग बताता हूं। मार्ग पर चलना तो बच्चों का काम है। बाप आकर मार्ग बताते हैं। साथ में ले जाते हैं। सिर्फ मार्ग नहीं बताते हैं साथ में भी ले जाते हैं। यह भी समझा जाता है यह जो चित्र आद हैं पिछाड़ी में कुछ भी काम नहीं आते। बाप ने अपना परिचय दे दिया है। बच्चे समझ जाते हैं बाप की वरसा बेहद की बादशाही है। वह पवित्र है। यहां भी सभी को पवित्र ही रहना है। जो कल मंदिरों में जाते थे महिमा गाते थे इन (ल०ना०) बच्चों की। बाबा तो इन्हों को भी बच्चे कहेंगे ना। उन्हों की ऊंच बनने की महिमा गाते थे। फिर ऊंच बनने का पुरुषार्थ करते हैं। शिव बाबा के लिए नई बात नहीं है। युद्ध= युद्ध के मैदान में हम, तुम हैं। हम तुमको तंग विकल्प तंग करते हैं। यह खांसी भी इनके कर्म का हिसाब-किताब है। इनको भोगना है। बाबा तो मौज में है। कर्मातीत हमको बनना है। बाप तो है ही सदैव कर्मातीत अवस्था में। हम, तुम बच्चों को माया के तूफान आद, कर्मभोग आवेंगा। यह समझना चाहिए। बाप तो रस्ता बताते हैं। बच्चों को सभी कुछ समझाते हैं। इस रथ को कुछ होता है तो तुमको फीलिंग आवेगी। दादा को कुछ हुआ है। बाबा को नहीं कुछ होता है। इनको होता है। तो तुम बच्चों को ही फीलिंग होती है। बाप समझाते हैं ज्ञान मार्ग में अन्धश्रधा की बात ही नहीं। बाप समझाते हैं मैं किस तन में आता हूं। बहुत जन्मों के अन्त के पतित तन में मैं प्रवेश करता हूं। दादा भी समझते हैं जैसे और बच्चे हैं मैं भी हूं। दादा पुरुषार्थी है। सम्पूर्ण नहीं है। तुम सभी प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण पुरुषार्थ करते हो विष्णु पद पाने लिए। ल०ना० कहो वा विष्णु कहो बात एक ही है। बाप ने समझाया भी है। आगे नहीं समझते थे। न ब्रह्मा विष्णु शंकर को, न कृष्ण को, अन्न को ही नहीं समझते थे। अभी तो बाप को ब्रह्मा-विष्णु शंकर को देखने से बुधि में आता है यह ब्रह्मा तपस्या करते हैं। यही सफेद ड्रेस है। कर्मातीत अवस्था भी यहां ही होगी। इनएडवान्स तुमको साक्षात्कार होता है।

यह बाबा फरिश्ता बनेगा। जैसे तुम हो, जिस कपड़े में हो जानते हो हम कर्मातीत अवस्था को पाकर फरिश्ता बनेंगे। नम्बरवार। जब तुम फरिश्ते बनते हो तब समझते हो अब लड़ाई लगेगी। मिरवा मौत ... बहुत ऊंच अवस्था बच्चों को धारण करनी है। यह भी निश्चय है हम जब चक्र लगाते रहते हैं। और कोई इन बातों को समझ नहीं सकते हैं। नया ज्ञान है। और फिर पावन बनने लिए बाप याद सिखलाते हैं। यह भी समझते हो। बाप से वरसा मिलता है। कल्प कल्प बाप के बच्चे बनते हैं। 84 का चक्र है। कोई को भी तुम समझाओ वो तुम आत्मा हो परमपिता परमात्मा बाप है। अभी बाप को याद करो तो उनकी बुधि में आवेगा। देवी प्रिन्स बनना है। तो इतना ऊंच पुरुषार्थ करना है। विकार आदि सभी छोड़ देनी है। बाप समझाते हैं बहन-भाई भी नहीं। बाप को याद कर विकर्म विनाश करना है। और कोई तकलीफ नहीं। पिछाड़ी में और कोई बातों कीदरकार नहीं पड़ेगी। सिर्फ बाप को याद करना है। और आस्तिक बन बनना है। ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है। चित्र बड़ा स्क्युरेट है ल० ना० का क। सिर्फ को भूल जाने से दैवी गुण धारण करना भी भूल जाते हैं। बच्चे एकान्त में बैठ विचार करे। बाबा को याद करने से हमको यह बनना है। यह गुण धारण करना है। बात तो बहुत ही छोटी है। बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कितना देह अभिमान आ जाता है। बाप कहते हैं देही-अभिमानी भव। आत्माभिमानी भव। बाप कहते हैं बाप से ही वरसा लेना है। बाप को याद करेंगे तब तो किचड़ा निकेंगा। समझते तो हैं, सिर्फ बच्चे भूल जाते हैं। यह है भूल-भूलईया का खेल।

बच्चे जानते हैं बाबा आया हैं तो बाबा से वेहद का वरसा ही मिलेगा। जिनको निश्चय है वह पुरुषार्थ करते हैं। बाप रथ में आया हुआ है। ब्र गाया हुआ है ब्रह्मा दवारा यह देवता बनना है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। तुम बच्चे जानते हो स्थापना हो रही है। इतनी सहज बात भी तुम से थिरक जाती है। एक अल्फ अलफ है। वेहद के बाप से वेहद की बादशाही मिलनी है। बाप को याद करने से नईदुनिया भी याद आ जाती है। अबलायें कुवनारें तो बहुत अच्छा पद पा सकती हैं। सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करे। बाप ने तो रास्ता बताया है। अ कहते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो। बाप ही पहचान तो मिली। बुधि में बैठ जाता है। अभी 84 जन्म तो पूरा हुआ। अभी हम घर जावें। फिर आकर स्वर्ग में पार्ट बजावेंगे। प्रश्न उठता ही नहीं कहां याद करें कैसे करें प्रश्न नहीं उठता। बुधि में बाप को याद करना है। बाप कहां भी जाये। तुम तो बच्चे ही उनके हो ना। वेहद के बाप को याद करना है। यहां बैठे तो तुमको मज़ा आता है। सम्मुख बाप से मिलते हो। मनुष्य भूल जाते हैं शिव बाबा की जयन्ति कैसे होंगी। यह भी समझते नहीं शिवरात्रि क्यों कहा जाता है। कृष्ण के लिए समझते हैं रात को जयन्ति होती है। परन्तु यह रात्रि की बात नहीं। वह तो आधा कल्प की रात्रि पूरी होती है फिर बाप को आना पड़ता है नई दुनिया की स्थापना करने। है बहुत सहज। बच्चे खुद समझते हैं सहज है। दैवी गुण धारण करनीहै। नहीं तो पाप सोणा हो जाता है।

मेरी निन्दा कराने वाले ऊंच ऊंच ठौर पा नहीं सकेंगे। बाप की निन्दा करावेंगे तो पद भ्रष्ट हो जावेंगे जावेंगे। बहुत मीठा बनना चाहिए। रफ डफ बात करना भी दैवी गुण नहीं है। समझना चाहिए यह आसुरी गुण हैं। प्यार से समझाना होता है। यह तुम्हारा दैवी गुण नहीं है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

पायन्टसः-

श्रेष्ठाचारी देवताओं को कहा जाता है। भ्रष्टाचारी कहा जाता है मनुष्यों को। इस समय तो देवता कोई नहीं। आधा कल्प दिन आधा कल्प रात। यह भारत की ही बात है। बाप कहते हैं मैं आकर सभी की सदगति करता हूं। बाकी और धर्मस्थापक अपने2 धर्म की स्थापना करते हैं। सभी आकर यहमंत्र लेजाते हैं। बाप को याद करना है। जो याद करेंगे वह अपने धर्म में ऊंच पद पावेंगे। बच्चों को पुरुषार्थ यहरूहानी म्युजियम अथवा कालेजखोलनी चाहिए। लिख दो विश्व की अथवा स्वर्ग की राजाई सेकण्ड में मिल सकती है आकर समझो। बाप को याद करो तो बैकुण्ठ की बादशाही मिलेगी। कितना सहज है। अच्छा।

ओमशान्ति

रही हुई पायन्टस:- यह भी बच्चे जानते हैं अभी कलियुग पूरा होता है। यह है संगम युग। मनुष्यों को तो कोई कुछ भी पता नहीं है। कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। समझते हैं 40 हजार वर्ष पड़े हैं। हम जीते रहेंगे सुख भोगते रहेंगे। यह नहीं समझते हैं दिन प्रति दिन और ही तमोप्रधान बनते रहेंगे। तुम बच्चों ने विनाश का साक्षात्कार भी किया है। आगे चल ब्रह्मा,का, कृष्ण का भी साक्षात्कार करते रहेंगे। ब्रह्मा के पास जाने से तुम स्वर्ग का ऐसा प्रिन्स बनेंगे। इसलिए अक्सर कर के ब्रह्मा और कृष्ण दोनो का सा0 होता है। कृष्ण को विष्णु का साक्षात्कार नहीं होता है। परन्तु उन से इतना समझ नहीं सकेंगे। नारायण का होने से समझ सकते हैं। यहां हम जाते ही हैं देवता बनने लिए। लक्ष्मी-नारायण बनने लिए। तो यह पाठशाला है ना। कौन पढ़ाते हैं? भगवानुवाचः भगवान राजयोग सिखलाते हैं। तुम सृष्टि के आदि मध्य अन्त का पाठ पढ़ते हो। पाठ पढ़ाया जाता है याद के लिए। पाठ आत्मा पढ़ती है। देह का भान उतड़ जाना चाहिए। आत्मा ही सभी कुछ करती है। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं। तुम मीठे-मीठे बच्चे 5000 वर्ष बाद फिर से आकर मिले हो। तुम वही हो। फिचर्स भी वही है। 5000 वर्ष पहले भी तुम ही थे। तुम भी कहते हो 5000 वर्ष के बाद बाबा आप वही आकर मिले हो। जो हमको मनुष्य से देवता बना रहे हो। हम देवता थे फिर असुर बने हैं। देवताओं के तो गुण गाये अपनी अवगुण वर्णन करते आये। अभी फिर से देवता बनना है। क्योंकि देवी दुनिया में जाना है। तो अभी अच्छी रीति पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाओ। टीचर तो सभी को कहेंगे पढ़ो। अच्छे मार्कस से पास हो। तो हमारा भी नाम बाला तो तुम्हारा भी नाम बाला होगा।

ऐसे बहुत कहते हैं बाबा आप के पास आने से कुछ निकलता ही नहीं। सभी भूल जाते हैं। आने से ही चुप हो जावेंगे। यह दुनिया जैसे कि कब्रदाखिल हुई पड़ी है। फिर तुम आयेंगे नई दुनिया में। वह तो बड़ी शोभनिक नई दुनिया होगी। कोई शान्तिधाम में विश्राम पाते हैं कोई को विश्राम नहीं मिलता है। आलराउन्ड पार्ट है। परन्तु तमोप्रधान दुःख से तो छूट जाते हैं ना। वहां शान्ति सुख मिल जाता है। वहां तुम होंगे तो शान्तिधाम को भी याद नहीं कर सकेंगे। कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको शान्ति चाहिए। चाहना ही दुःख देती है। सभी कुछ मिल जाता है। तो ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए अच्छी रीति। ऐसे तो नहीं जो नसीब में होगा। नहीं पुरुषार्थ करना चाहिए। समझा जाता है राजधानी स्थापन हो रही है। हम श्रीमत पर अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाबा जो श्रीमत देने वाला है वह खुद राजा नहीं बनता है। उनकी ही श्रीमत से हम बनते हैं। नई बात है ना। कब कोई ने न कब सुनी न देखी। अभी तुम बच्चे श्रीमत पर बैकुंठ की स्थापना करते हो। हम ने अनगिनत राजाई स्थापन की है। करते फिर गंवाते हैं। यह चक्र फिरता रहता है। पादीरी लोग जब चक्र लगाने निकलते हैं तो और कोई को देखने पसन्द भी नहीं करते हैं। सिर्फ क्राईस्ट की ही याद में रहते हैं। याद में माला हाथ में फेरते रहते हैं। शान्ति में चक्र लगाते हैं। समझे है ना। क्राईस्ट की याद में कितना रहते हैं। सिवाय क्राईस्ट के और कोई देखना भी पसन्द नहीं करते। सिर्फ क्राईस्ट का सा0 होगा। सभी पादरी ऐसे थोड़े ही होते हैं। कोटों में कोऊ तुम्हारे में भी नम्बरवार है। कोटों में कोऊ ही याद में रहते होंगे। कोशिश कर के देखो। और कोई को देखो नहीं। बाप को याद करते और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। तुमको अथाह खुशी होगी। अच्छा अच्छा ओम।

ईलाहाबाद में एक नया सेन्टर खुला है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं:-

P.P. BRAHMA KUMARIS
107, Lashkar Mohalla
Purana Bahrana
ALLAHABAD (u.p.